

CONTENTS

श्रीमद्भागवतम्

विषय-सूची

आमुख

प्रस्तावना

अध्याय एक

ईश अनुभूति का पहला सोपान

ईश-स्तवन

कृष्ण कथा श्रवण का महत्त्व

ईष्यालु गृहस्थों के कार्यकलाप

सांसारिक मनुष्य का मोह

भगवान् के विषय में श्रवण तथा महिमागायन

कृष्ण का स्मरण ही मनुष्य जीवन की सर्वोच्च सिद्धि

सर्वोच्च अध्यात्मवादी
श्रीशुकदेव गोस्वामी द्वारा 'श्रीमद्भागवत' का सुना जाना
प्रामाणिक गुरु से श्रवण की आवश्यकता
पवित्र नाम के प्रति अपराध
महाराज खट्वांग का उत्तम उदाहरण
अगले जीवन के लिए सर्वश्रेष्ठ तैयारी
मन को वश में करने की विधि—प्राणायाम
विष्णु के स्वरूप का ध्यान
विराट रूप का ध्यान
विराट रूप का वर्णन
विभिन्न लोक
उनके बाहु, कान, नथुने, मुँह
उनकी आँखें, तालू, जीभ
उनके जबड़े, ब्रह्मरन्ध्र, दाँत, मुस्कान
उनके होठ, टुडुड़ी, वक्षस्थल, पृष्ठ, कटि, अस्थियाँ
उनकी नसें, बाल, श्वास, गतियाँ
उनकी वेशभूषा, बुद्धि, मन
उनकी चेतना, अहंकार, नाखून
उनकी कलाप्रियता, आवास, संगीत-लय, अद्भुत पराक्रम
उनका मुखमंडल, बाहें, जाँघ, पाँव
सबके परमात्मा कृष्ण की पूजा
अध्याय दो
हृदय में भगवान्
श्री ब्रह्माजी तक विस्मृति की निद्रा में
वेदों के अलंकारिक शब्द भ्रामक हैं
भौतिक सृष्टि: मात्र नामों का वाग्जाल
जीवन की तथाकथित सुविधाएँ
आध्यात्मिक प्रगति में बाधक
संन्यास जीवन के कर्तव्य
परमात्मा की सेवा करना परम धर्म
निपट भौतिकतावादियों की मूर्खता
भगवान् विष्णु के चौबीस रूप
तरुण भगवान् का दिव्य सौन्दर्य
कामेच्छा बद्धजीव को बाँधती है
भगवान् के अंगों का ध्यान

जीवात्माओं की स्वाभाविक स्थिति
भगवद्धाम जाने में शुद्ध मन द्वारा आश्चर्यजनक क्रिया
आध्यात्मिक स्तर पर विनाशकारी काल नहीं आता
केवल शुद्ध भक्तों को वैकुण्ठ लोक की स्पष्ट झलक
कुशल योगी व्यर्थ के कार्य नहीं करते
भक्तियोगी किस प्रकार भौतिक सम्बन्धों को त्यागता है
अन्य लोकों की सुगम यात्रा
वैदिक कथन की प्रामाणिकता
दृश्य जगत का वर्णन
भक्ति-लता का सिंचन
केवल शुद्ध आत्मा ही ईशप्रेम पाने की अधिकारी
परम्परा से प्राप्त वैदिक ज्ञान
मुक्ति का एकमात्र साधन—भक्तियोग
परमात्मा—हमारा मित्र तथा पथप्रदर्शक
'श्रीमद्भागवत' सुनने से दूषित जीवन शुद्ध हो जाता है
अध्याय तीन
शुद्ध भक्ति: हृदय परिवर्तन
मृत्यु आने पर बुद्धिमान व्यक्ति का कर्तव्य
पूजा की विविध विधियाँ
समस्त यज्ञों के परम भोक्ता—कृष्ण
भगवान् से शुद्ध भक्त की संगति
हरिकथा समस्त संसारी कथाओं को पराजित करती है
परमहंसों द्वारा अनुभूत हरि की विवेचना
भाग्यशाली वैष्णव परिवारों की जीवन शैली
महाराज परीक्षित तथा शुकदेव गोस्वामी दोनों ही
अनन्य भक्त
कृष्ण भक्त को शाश्वत जीवन की गारंटी
परिष्कृत पशुओं का समाज दुखी मानवता को लाभ
नहीं पहुँचा सकता
कूकर, शूकर, ऊँट तथा गधों के तुल्य मनुष्य
भक्तों की तीन श्रेणियाँ
संसारी शब्दों का कीर्तन करने वाली जीभ
वेश्या तुल्य है
अर्चाविग्रह पूजा से जीवन सफल हो जाता है
शुद्ध भक्त भगवान् के दासों के दास को प्रसन्न

करने का यत्न करता है
हृदय परिवर्तन के लक्षण
अध्याय चार
सृष्टि प्रक्रम
वैदिक महत्त्वाकांक्षा
गृहस्थ जीवन का अन्धकूप
महाराज परीक्षित द्वारा समस्त सकाम कर्मों का परित्याग
महाराज परीक्षित द्वारा पुछे गये सृष्टि सम्बन्धी प्रश्न
कृष्ण की अंतरंगा, बहिरंगा तथा तटस्था शक्तियाँ
भगवान् के कार्य अत्यन्त अद्भुत होते हैं
कृष्ण के अनन्त स्वरूप
शुकदेव गोस्वामी द्वारा स्तुति
संसारीजन वैकुण्ठ लोक में जाने के अयोग्य
भगवान् का श्रवण, यशोगान तथा स्मरण करना
कृष्ण की सेवा में सारे गुणों को लगा देना
भक्तगण सारे दिखावे से मुक्त
कृष्ण सर्वेसर्वा
शुद्ध भक्त की विनम्रता
दिव्य शब्दोच्चार
परमात्मा ही हर वस्तु का स्रोत
कृष्ण के मुख से अमृत
अध्याय पाँच
समस्त कारणों के कारण
ब्रह्माजी से श्रीनारद की जिज्ञासा
नारद द्वारा ब्रह्मा को समस्त कारणों का कारण मान बैठना
मिशनरी कार्यकलापों का मूल सिद्धान्त
भगवान् सदैव भगवान् रहता है
ब्रह्म ज्योति—समस्त सृष्टि की बीज स्वरूप
मोहग्रस्त व्यक्तियों द्वारा प्रलाप
सृष्टि के मूलभूत अवयव
नारायण ही चरम लक्ष्य
सृजन के लिए भगवान् द्वारा आत्मा को शक्ति प्रदान करना
सृष्टि का नियम
सतो, रजो तथा तमो गुण
आत्मकेन्द्रित अहंकार

आकाश तथा इसका सूक्ष्म स्वरूप : शब्द
विकास का वर्णन
प्रकाश का पथ : कृष्ण की इन्द्रियों की तुष्टि
शरीर यन्त्र
भगवान् की दासी
महाविष्णु का साँस लेना
विराट रूप
मानव समाज के चार विभाग
लोकों का वर्णन
अध्याय छह
पुरुष सूक्ति की पुष्टि
विश्व रूप के ऐश्वर्य
समस्त शक्ति के स्रोत—श्रीकृष्ण
भगवान् के चरणकमल
ब्रह्मण्ड का लय
परम सत्ता स्वरूप कृष्ण
स्वयं प्रकाशित वैकुण्ठ लोक
ब्रह्मचर्य व्रत आवश्यक
अविद्या और अध्यात्म
सूर्यवत् पुरुषोत्तम
यज्ञों के लिए आवश्यक वस्तुएँ
शान्ति का गुर
ब्रह्मा, विष्णु और शिव
परम्परा से प्राप्त वैदिक विद्या
भक्तिवेदान्त का तात्पर्य
आध्यात्मिक आनन्द का सागर
संस्तुत भक्तिकार्य
भगवान् की अचिन्त्य निजी शक्तियाँ
कृष्ण निष्कलुष हैं
भौतिक सृष्टि का झूठा खिलवाड़
'श्रीमद्भागवत' से परम तुष्टि की प्राप्ति
अध्याय सात
विशिष्ट कार्यों के लिए निर्दिष्ट अवतार
विशाल शूकर अवतार
महामान्य कपिल

चारों कुमार
स्त्री-आकर्षण का जादू
राजकुमार ध्रुव
सम्राट ऋषभदेव
हयग्रीव अवतार
भगवान् मस्त्य
भगवान् कच्छप
नृसिंह देव
पवित्र नाम का जप करने योग्य है
वामनदेव द्वारा बलि महाराज का पक्षपात
हंसावतार द्वारा नारद को उपदेश
मनु अवतार
धन्वतरि द्वारा ओषधि विज्ञान का उद्घाटन
परशुराम द्वारा पृथ्वी को निष्कंटक बनाना
श्रीमद्रामायण का सार-संक्षेप
सुन्दर काले बालों वाले भगवान्
श्रीकृष्ण द्वारा पूतना का वध
विषधर कालिय नाग को दण्ड
भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत का उठाया जाना
असुर किस तरह मोक्ष प्राप्त करें
वैदिक ज्ञान का वृक्ष
कल्कि: परम दण्डदाता
विष्णु का पराक्रम
परमार्थवाद का ढकोसला
भगवान् के प्रति समर्पण
परम उपकारकर्ता
संक्षिप्त भागवत
अध्याय आठ
राज परीक्षित द्वारा पूछे गये प्रश्न
शिष्य परम्परा का अवरोही क्रम
पेशेवर भागवत कथावाचक व्यर्थ है
पंकमय तालों पर शारदीय वर्षा
कष्टप्रद यात्रा के बाद घर
भागवत की दार्शनिक आधारशिला स्थापित करने के प्रश्न
कर्म के कारण तथा फल

ब्रह्मा द्वारा ब्रह्ममाण्ड की पुनः सृष्टि
अपने पिता के लाड़ले पुत्र—नारद
ब्रह्म सम्प्रदाय
अध्याय दस
भागवत सभी प्रश्नों का उत्तर है
सोलह प्रकार के प्राकट्य
जीवन की सही दिशा
दृश्य जगत का संहार
परम स्रोत
नियन्ता और नियन्त्रित
अभियन्ता की प्रशंसा की जाय
भगवान् की चितवन
इन्द्रियाँ और इन्द्रियबोध
आपन सोची होत नहिं, प्रभु सोची तत्काल
ज्ञान का श्रवण
कर्तव्यनिष्ठ यज्ञ
सन्तानोत्पत्ति
हृदय में परमात्मा का वास
भगवान् के दिव्य रूप
विष्णु—सर्वशक्तिमान पिता
कूपमंडूक
कृष्ण का आनन्द स्वरूप
सौंदर्य के पीछे बुद्धि
परिशिष्ट

ब्रह्मा द्वारा ब्रह्ममाण्ड की पुनः सृष्टि
अपने पिता के लाड़ले पुत्र—नारद
ब्रह्म सम्प्रदाय
अध्याय दस
भागवत सभी प्रश्नों का उत्तर है
सोलह प्रकार के प्राकट्य
जीवन की सही दिशा
दृश्य जगत का संहार
परम स्रोत
नियन्ता और नियन्त्रित
अभियन्ता की प्रशंसा की जाय
भगवान् की चितवन
इन्द्रियाँ और इन्द्रियबोध
आपन सोची होत नहिं, प्रभु सोची तत्काल
ज्ञान का श्रवण
कर्तव्यनिष्ठ यज्ञ
सन्तानोत्पत्ति
हृदय में परमात्मा का वास
भगवान् के दिव्य रूप
विष्णु—सर्वशक्तिमान पिता
कूपमंडूक
कृष्ण का आनन्द स्वरूप
सौंदर्य के पीछे बुद्धि
परिशिष्ट